# भारत चीन युद्ध (1962)

प्र०: 1962 में चीन के साथ हुए युद्ध से प्राप्त राजनीतिक एवं सैनिक शिक्षाओं का विवेचना कीजिए।

प्र०: 1962 के भारत चीन युद्ध की स्त्रातजी और समरतंत्र का मूल्यांकन कीजिए।

**परिचय INRODUCTION** –: प्राचीन काल में भारत और चीन के सम्बन्ध बड़े मधुर रहे हैं। स्वतंत्र हो जाने के बाद भी भारत ने चीन के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने का प्रयास किया। 1949 में हुई चीन की साम्यवादी क्रान्ती को भारत ने मान्यता दे दी। तथा चीन से अच्छे सम्बन्ध रखने के लिए 29 अप्रैल 1954 को भारत चीन के बीच पंचशील समझौता किया गया, हिन्दी-चीनी भाई-भाई के नारे लगाये गये। तथा तिब्बत पर किये गये चीन का अधिकार भी भारत ने स्वीकार कर लिया। फिर भी भारत के प्रति चीन का व्यवहार अच्छा नहीं रहा।

**भारत चीन सीमा विवाद** –: तिब्बत पर अधिकार कर लेनें के बाद चीनी सैनिक भारतीय सीमा पर अतिक्रमण करने लगे। जब भारत सरकार ने विरोध किया तो चीन ने भारत पर विस्तारवादी होने का आरोप लगाया 27 दिसम्बर 1959 को चीन ने भारत के विदेश मंत्रालय को एक नक्शा भेजा जिसमें कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र तथा अरुणांचल प्रदेश के 50000 वर्गमील क्षेत्र को अपने कब्जे मे नक्शे में दिखाया गया था। इस दावे को नेहरु ने अनुचित करार देते हुए कहा "भारत के लिए ऐसा दावा स्वीकार करना असम्भव है चाहे इसका परिणाम कुछ भी हो। इस दावे को मान लेने का अर्थ है। कि हिमालय को चीन को उपहार मे दे देना। यदि एशिया के दो बड़ें राष्ट्र भारत एवं चीन आपस मे टकराते हैं। तो यह सारे विश्व को कम्पित करने वाला युद्ध होगा। यदि दुर्भाग्य वस स्थिति बिगडती है तो भारत पूरा राष्ट्र शस्त्र धारण करेगा और जीवन तथा मृत्यु का संघर्ष होगा

**भारत चीन सीमा** –: भारत और चीन के मध्य 2500 मील तथा भूटान एवं तिब्बत के मध्य लगभग 300 मील लम्बी सीमा है। यह सीमा विभिन्न सन्धियों एवं परम्पराओं द्वारा निर्धारित है। हिमालय की ऊंचाई से बहकर जो पानी भारत की ओर आता है। वह भारतीय सीमान्त क्षेत्र है। तथा जो पानी बहकर तिब्बत की ओर जाता है, वह तिब्बती सीमा क्षेत्र है। इस सीमा क्षेत्र को मैकमोहन रेखा कहते हैं। लेकिन चीन इस रेखा को भारत एवं चीन के मध्य सीमा रेखा नहीं मानता जैसा कि सी.जे.कविक ने लिखा है कि चीन मैकमोहन रेखा को सीमा नही मानता और भारत द्वारा मान्यता प्राप्त

50000 वर्गमील से अधिक क्षेत्र अपना मानता है। जिसमें 15000 वर्गमील क्षेत्र लद्दाख में तथा 32000 वर्गमील क्षेत्र नेफा में और शेष मध्यवर्ती क्षेत्र मे फैला है।

**चीनी आक्रमण के कारण एवं उद्देश्य -:** विस्तारवादी चीन द्वारा भारत पर हमला करने के कुछ निश्चित उद्देश्य एवं कारण थे।

जनरल बी० एम० कौल के अनुसार - (1) कम्युनिष्ट चीन भारत पर हमला करके अपनी गिनती विश्व की महाशक्तियों में करना चाहता था, साथ ही उसका यह आक्रमण रूस और अमेरिका को चेतावनी देना था कि एशिया मे एक महत्वपूर्ण शक्तिशाली शक्ति केवल चीन है

(2) चीन एशिया के देशों में अपना प्रभाव डालना चाहता था कि एशिया की शक्ति चीन है न की भारत।

(3) चीन भारत को जोकि अपने को आदर्श एवं राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में चीन का प्रतिद्वन्द्वी समझता था। इस दृष्टि से भारत को अपमानित करना चाहता था।

(4) चीन तिब्बत की जनता को यह सबक सिखाना चाहता था कि भारत जैसा कमजोर देश चीन के खिलाफ तिब्बत की सहायता करने मे असमर्थ है।

**चीन का भारत पर आक्रमण -:** तिब्बत सीमा पर चीन की 14 डिवीजन सेना तैनात थी जबकि इनका मुकाबला करने के लिए भारत की 10 डिवीजन से भी कम सेना तैनात थी। अत: चीन के आक्रमण को रोकपाना कठिन था इस समय भारतीय थल सेना ध्यक्ष पी० एन० थापा थे। 20 अक्टूबर 1962 को चीन ने बड़े पैमाने पर लद्दाख एवं नेफा क्षेत्र पर आक्रमण कर दिये। लद्दाख क्षेत्र में अपने सीमित साधनों के बावजूद भारतीय सेना ने वीरता पूर्वक मुकाबला किया, यहाँ आठ गोरखा राइफल के मेजर धनसिंह थापा, सिख रेजीमेंट के सूबेदार जोगिन्दर सिंह और कुमाँयू रेजीमेन्ट के मेजर शैतान सिंह को इसी क्षेत्र में वीरता के लिए परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

नेफा के पूर्वी मोर्चे मे भी बॉमदीला, तवांग, शेला पहाड़ी पर भीषण युद्ध हुआ और बडे भू-भाग पर चीन ने कब्जा कर लिया। भारत को यह डर हो गया कि सम्पूर्ण असम क्षेत्र में चीन का कब्जा हो सकता है। अत: भारत ने अमेरिका और ब्रिटेन से सहायता मांगी तथा अमेरिका और ब्रिटेन ने तत्काल सहायता देनी शुरू कर दी। अमेरिकी नौ सैनिकों का बेड़ा हिन्द महासागर में आ गया था, गोला बारुद और अन्य साज सामानों की आपूर्ति शुरु हो गयी।

**युद्ध विराम -:** पश्चिमी देशों द्वारा दी जाने वाली सहायता को देखकर बड़े नाटकीय ढंग से 20 नवम्बर 1962 को चीन ने युद्ध विराम की घोषणा कर दी। दुनियां के इतिहास में विजय प्राप्ति के बाद एक पक्षीय युद्ध विराम की यह पहली और अनोखी घटना थी।

## युद्ध से प्राप्त राजनैतिक एवं सैनिक शिक्षाएं अथवा भारत की पराजय के कारण -

① इस युद्ध में भारतीय सेना की पराजय की जिम्मेदारी उनकी पुरानी सामरिकी थी क्योंकि हमारी सेनाएं सदैव सडकों के द्वारा चलती थी। जबकि चीनी सेनाएं सड़कों के अतिरिक्त अन्य मार्गों का उपयोग करके आगे बढ़ती थीं और कार्यवाहियां करती थीं।

② हमारी सेनाओं को जंगली एवं पहाड़ी क्षेत्रों में लड़ने के लिए उचित प्रशिक्षण नहीं प्राप्त था। जबकि अधिकांश सैन्य कार्यवाहियां ऊँचाई वाले क्षेत्रों में हुई थी 'नेफा' में सर्वप्रथम जो सेना भेजी गयी, उसमें बहुत से सैनिक मद्रासी थे। जो दक्षिण भारत के गर्म प्रदेश के रहने के अभ्यस्त थे जबकि चीनी टुकड़ियां गुरिल्ला युद्ध, पर्वतीय एवं ठंडे वातावरण में युद्ध करने में पूर्णतः सक्षम थी। ③ भारत की पराजय का एक मुख्य कारण उसकी अकुशल गुप्तचर व्यवस्था थी जिससे हम चीन की महत्वपूर्ण योजना का पता नहीं लगा पाते थे जबकि चीन हमारी अनेक सैनिक टुकड़ियों और राजनैतिक गतिविधियों को जान गया था।

④ इस युद्ध ने स्पष्ट कर दिया कि विजय श्रेष्ठ हथियारों पर निर्भर करती है, चीन की स्वचालित राइफलें, तोपखानें आदि की तुलना में ३०३ (थ्री नाट थ्री) राइफल से विजय की आशा करना असम्भव था। ⑤ संचार एवं आपूर्ति के साधनों की कमी जो भारत की पराजय का मुख्य कारण था। जैसा की जनरल बी०एम० कौल द्वारा भेजे गये एक संदेश से स्पष्ट होता है — (A) हमारी वायुसेना द्वारा गिरायी गयी अधिकांश खाद्य सामग्री, गोला बारूद, सर्दी के कपड़े ऐसे दुर्गम स्थानों पर गिरते थे, जिन्हें हमारी सेनायें न पा सकी। B:- इस कमान में स्थित राजपूत एवं गोरखा सेनाओं के लिए दो या तीन दिन की खाद्य सामग्री तथा एक सैनिक के पास केवल 500 गोलियां उपलब्ध है। हमारे अन्य हथियार अभी मध्य में ही है। (C) यहाँ की दोनों बटालियनों में जाड़े के कपड़ो का पूर्णतः अभाव है, और वे सिर्फ एक कम्बल के साथ गर्मी के कपड़ो में 15000 फीट की ऊँचाई पर है।

D:- यहाँ पर समझने वाले नागरिकों की कमी है। वायुसेना द्वारा सामान गलत जगह गिरा देने के कारण समस्या और उत्पन्न हो जाती है (E) इस कार्य के लिए हमें कुछ अतिरिक्त वायुयानों की आवश्यकता है।

उपरोक्त बातें यह स्पष्ट करती है कि भारतीय सेनाओं के समक्ष उस क्षेत्र में जाने वाली कार्यवाहियों में हथियारों की कमी, सड़कों का अभाव, सैनिक एवं साज सामान का अभाव, संचार एवं पूर्ति की अव्यवस्था तथा अकुशल नेतृत्व आदि अनेक समस्याओं ने बाधा उत्पन्न की। तत्कालीन भारतीय रक्षा मंत्री एस० बी० चौहान ने 2 सितम्बर 1963 को नेफा की कार्यवाही पर लोकसभा में अपने वक्तव्य के दौरान

कहा था कि हमारी असफलताओं मे प्रशिक्षण, हथियार, कमाण्डर प्रणाली, सेनाओं की सामरिक अव्यवस्था तथा सेनानायकों मे सैनिकों को प्रभावित करने की कला की कमी, यह प्रकार थे।

6. इस युद्ध में हमारे राजनीतिज्ञों की अदूरदर्शिता स्पष्ट होती है। क्योकि जब भारत पंचशील एवं हिन्दी, चीनी भाई-2 के द्वारा मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की दुहाई देने में लगा था। तब चीन ने अचानक आक्रमण कर दिया तथा युद्ध क्षेत्र में भारतीय सेना की तरफ लाउडीस्पीकरों द्वारा बार-2 यह नारा लगाया गया। "हिन्दी चीनी भाई-2 यह जमीन हमारी है। तुम वापस जाओ।"

7. अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति के कारण भारत को जो प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही थी। उससे चीन द्वेष करता था। इस आक्रमण के द्वारा वह भारत को नीचा दिखाना चाहता था कि उसे उसकी गुटनिरपेक्षता की नीति सुरक्षा नही प्रदान कर सकती।

THE END.....